

जातिवाचक सँज्ञा के दो भेद:-

- (i) द्रव्यवाचक
- (ii) समुदाय/समूहवाचक

(i) **द्रव्यवाची जातिवाचक सँज्ञा** - वे सँज्ञा शब्द जो किसी द्रव्य-
 पदार्थ का बोध कराते हैं, द्रव्यवाची जातिवाचक सँज्ञा शब्द कहाते हैं-
जैसे- सोना, चाँदी, लौंवा, पीतल, लोहा, क्लास्टिक, स्लीप, तेल, दूध,
 घी, पानी, शक्कर, गैस, गीजल, पेट्रोल इत्यादि

(ii) समुदाय/समूहवाची जातिवाचक संज्ञा— वे संज्ञा शब्द जो किसी समुदाय/समूह का बोध कराते हैं, समुदाय/समूहवाची जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं—

जैसे— सभा, सेना, सम्मेलन, गिरीह, जत्था, गोष्ठी, टीम, दल, वृन्द, गण, जन, लोली, गुच्छा, ढेर, कुँज, आगार इत्यादि

संज्ञा की पहचान के विशेष नियम:-

- ① व्यक्तिवाचक संज्ञा का कोई शब्द जब अपने साथ अन्य नाम का बोध कराता है तो उस अन्य नाम में जातिवाचक संज्ञा होती है-

जैसे- सीमा हमारे घर की भक्ष्मी है।

↓
व्यक्ति०

↓
जाति०

कालीदास को भारत का शेक्सपियर कहा जाता है।

↓
व्यक्ति०

↓
जाति०

प्रभूदेवा को भारत का माईकल जैक्शन कहा जाता है।

↓
व्यक्ति०

↓
जाति०

भारत में अनेक जयचन्द हैं।

↓
व्यक्ति०

↓
जाति०

राधा तो हमारे घर की गंगा है।

↓
व्यक्ति०

↓
जाति०

② जातिवाचक सँज्ञा का कोई शब्द जब किसी व्यक्ति विशेष के अर्थ में रुढ़ हो जाता है तो वहाँ व्यक्तिवाचक सँज्ञा होती है-

जैसे- गांधी - गांधी जी ने देश को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया।
 नेहरू - नेहरू जी ने विदेशों में भारत को पहचान दिलाई।
 पटेल - पटेल जी ने देश की एकता और भूखंडों को बनाए रखा।
 मोदी - मोदी जी ने देश को अलग पहचान दिलाई।
 शास्त्री - शास्त्री जी एक महान व्यक्तित्व थे।

③ भाववाचक संज्ञा का प्रयोग हमेशा एकवचन में किया जाता है, बहुवचन में प्रयोग होते ही भाववाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा का रूप धारण कर लेती है।

जैसे - आजकल शहर में चोरियाँ बहुत हो रही हैं।

↓
जाति०

शहर में गंदगियों के ढेर लग गए हैं।

↓
जाति०

अब तो नजदीकियाँ भी दूरियाँ बन गईं।
 जाँति० जाँति०

हम सबकी प्रार्थनाएँ बेकार नहीं जाएँगी।
 जाँति०

मुझे सुखों में जीवनयापन करने की चाह नहीं है।
 जाँति०

उस पर दुःखों का पहाड़ बूर पड़ा।
 जाँति०



UTKARSH
CLASSES